प्रातः क्लास 23-3-68 ओमशान्ति पिताश्री "शिव बाबा याद है?"

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों आत्म-अभिमानी भव। देह का अभिमान छोड़ अपने को आत्मा समझो। यह भी जानते हो परमात्मा एक है। ब्रह्मा को परमात्मा नहीं कहा जाता। ब्रह्मा की तो 84 जन्मों की कहानी तुम जानते हो। यह है इनका अन्तिम जन्म तमोप्रधान। मुझे आना भी उस में होता है जो सब से जास्ती तमोप्रधान होता है। उनके ही शरीर में आता हूं जिसने पूरे 84 जन्म लिये हैं। इनको ही बताता हूं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। मैं समझाता हूं। पहले2 तुम यह थे। एक को तो नहीं कहेंगे ना। यह तो डिनायस्टी है। अभी यह बनने लिए फिरसे पुरुषार्थ करना पड़े। इतने शास्त्र आद जो भी पढ़े हुये हो वह तो सभी हैं भक्ति-मार्ग के। भक्ति करते सीढ़ी नीचे उतरनी होती है। पुनर्जन्म तो पहले जन्म से ही शुरू होता है। अभी बाप कहते है मै जो तुमको सुनाता हूं वह राईटस है। बाकी जो कुछ सुना है वह है रांग। मुझे कहते ही हैं ट्रूथ। सत्य बोलने वाला। वही सच्चे धर्म की स्थापना करेंगे। कहते हैं "सच्च तो बिठो नच"। अर्थात डान्स करो। खुशी में ही डांस होती है। यह है ज्ञान डांस। वह लोग फिर कृष्ण का दिखाते हैं। मुरली बजाना, रास आद करना। वह तो हैं सच्च खण्ड के मालिक। इनको भी बनाने वाला कौन। वह है सच्च-खण्ड। यह है झूठ-खण्ड। भारत सच्च-खण्ड था जब कि इनका राज्य था। और कोई खण्ड था नहीं। मनुष्य यह नहीं जानते स्वर्ग कहां है। कोई मसेन्ज़े तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। कितने जंगली बेवकुफ हैं। उल्लू पाजी हैं। बाप समझाते हैं तुम उल्लू बन उल्टा लटक पड़े हो। माया के अधीन हो पड़े हो। अभी तुमको बाप आकरसुल्टा बनाते हैं। भक्ति होती ही है नीचे गिरने लिए। बाप कहते हैं अभी भक्ति-मार्ग का कोई भी अक्षर नहीं सुनो। हीयर नो ईवल। जो कहते हैं सर्व-व्यापी हैं, तुम कान बन्द करो। मेरे सिवाय और कोई की नहीं सुनो। भक्तों का फल देने वाला है भगवान। सभी भक्ति मार्ग में हैं ना। ज्ञान-मार्ग है नहीं। जो भी शास्त्र आद हैं सब भक्ति के हैं। भजन आद करनासभी भक्ति। ज्ञान में भजन आद होती नहीं। आवाज़ नहीं होता। तुम जानते हो अभी हमको आवाज़ परे वापस जाना है। बाप कहते हैं मीठे बच्चों को कब भी मुख से हे भगवान भी न कहना है। यह भी ईवल हो गया। मुखसे कुछ भी बोलने की दरकार नहीं। कलियुग के अन्त तक भक्ति मार्ग चलता है। अभी यह है पुरुषोत्तम संगम युग। जब कि बाप आकर ज्ञान सु उत्तम बनाते हैं। भक्ति से मध्यम कनिष्ट बनते हैं। अभी भक्ति का आर, मनुष्य मत न सुनो। एक ही ईश्वर की मत पर चलो। जो ईश्वर कहे वह राईट है। जो मनुष्य कहे वह रांग है। बाप खुद भी मनुष्य तन में आकर समझाते हैं। यह बाईबल कुरान गीतावशिष्ट महाभारत आद सभी दुर्गति में ले जाने वाले हैं। तुम कितने बेसमझ बने गये हो। समझदार से बेसमझ बने हो। तुम गोल्डेन एज में थे अभी आयरन एज में हो। कां का जो होगा उनको यह बातें बहुत अच्छी लगेंगी। यहां वाले को मीठी लगेंगी। यह बाबा भी खुद गीता आद पढ़ते थे। बाप मिला तो गीता फेंकदी। समझा यह तो ईवल चीज़ें हैं। गुरु भी कितने थे। बाप ने कहा यह सभी भक्ति मार्ग के हैं। ज्ञान सागर तो एक ही बाप है। बाकी सभी हैं भक्ति। एक भी ज्ञान नहीं। ज्ञान जब मेरे से सुने तब ही ज्ञानी कहा जाये। बाकी सभी हैं भक्ति। भक्ति के शास्त्र सुनने और ही दुर्गति होती है। इसलिए मामेकं ही सुनो। श्रीमत ही श्रेष्ठ है। बाकी वह सभी हैं मनुष्य मत। आसुरी मत। ईश्वर की मत यह है। वह है रावण की मत। यह है भगवान की मत। भगवानुवाच तुम कितने महान भाग्यशाली हो इसलिए तुम्हारा हीरे जैसा जन्म अभी है। अगूंठी में भी हीरे बीच में डालते हैं। माला में भी ऊपर होता है फूल। फिर मेरा नाम भी है आदम बीबी। तुम कहेंगे मम्मा बाबा। आदी देव-आदी देवी। यह हैं संगम युग की। संगम युग ही सब से उत्तम है। जब कि इस राज्य की स्थापना हो रही है। तुम बच्चों को सर्व गुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण यहां बनना है। पुरानी दुनिया को नई बनाने लिए बाप आते हैं। बदलनी तो जरूर पड़ेगी। इस दुनिया का डेक्यूरेशन कितना है। यह भी तुम बच्चों के सिवाय कोई नहीं जानते। लाखों वर्ष कह देते हैं। यह हैं सभी झूठी बातें। झूठी माया, झूठी काया, झूठा सब संसार कहा जाता है। सच्च है ही नई

दुनिया। यह है झूठ-खण्ड। फिर झूठ खण्ड को सच्चखण्ड बनाना यह तो बाप का ही काम है। बाप कहते हैं भक्ति-मार्ग के जो भी वेद-शास्त्र आद हैं इन सब को भूलो। यह तुम्हारा है वेहद का वैराग्य। वह तो सिर्फ घर-बार छोड़ इस ही दुनिया में जंगल में चले जाते हैं। यह भी उन्हों के ड्रामा में नूंध है। क्यों का सवाल नहीं उठता। घर-बार क्यों छोड़ते हैं, नहीं। यह तो बना बनाया ड्रामा है। बाप समझाते हैं ऐसे2 दुनिया में होता है। यह तुम बच्चों को समझाते हैं। वह धर्म ही बिलकुल अलग हैं। और जो भी धर्मवाले हैं वह स्वर्ग में नहीं आ सकते। बुध डिनायस्टी, क्रिश्चन डिनायस्टी कोई भी स्वर्ग में नहीं आते। वह तो आते ही हैं पीछे। पहले2 है डीटी डिनायस्टी। फिर इस्लामी ब्रु बौधी आते हैं अपना2 धर्म स्थापन करने। बाप पुरुषोत्तम संगम युग पर आकर यह डीटी डिनायस्टी स्थापन करते हैं। और तो कोई डिनायस्टी नहीं स्थापन करते। सन्सोबुध आया। उनकी आत्मा कोई में आदेगी आते तो गर्भ में ही हैं। छोटा बच्चा था तो बड़ा हुआ। शिव बाबा तो छोटा-बड़ा नहीं होता है। न वह गर्भ से जन्म लेते हैं। बुध की आत्मा ने प्रवेश किया। बुध धर्म तो पहले होता ही नहीं। जरूर यहां के कोई में प्रवेश करेंगे। गर्भ में तो जरूर जायेंगे। बुध धर्मका एक मनुष्य ही स्थापना करेंगे। फिर उनके बच्चे और आते जायेंगे। बुध को बाल-बच्चे आद सभी थे। फिर वृधि होती गई। जब लाखों की अन्दाज में हो जाते हैं बाद में राजाई चलती है। ब्रु बौधों का भी राज्य था ना। जपान, चीन का भी राजा था ना। बौधियों का बॉर्डर है ना। बाबा ने समझाया था कैसे इनवेड कर जमीन ली है क्रिश्चन फिर छोड़ते गये। बाउन्डरीज़ पता नहीं पड़ता है। फिर भाषा पर देखते हैं। तो बाप समझाते हैं यह सभी पीछे आते हैं। उनको गुरु वा प्रीसेप्टर भी नहीं कहा जाता। गुरु होता ही एक है। अपने धर्म की स्थापना करते हैं। फिर नीचे आते जाते हैं। बाप ने तो सभी को ऊपर भेज दिया। फिर मुक्तिधाम है एक एक होकर आते हैं। जैसे तुम भी जीवनमुक्ति से नीचे आते हो। वैसे वह भी मुक्तिसे नीचे आते हैं। उनकी महिमा क्या है क्या। वह तो सिर्फ धर्म स्थापक हैं। बाकी ब्रु उनको तो कुछ भी पता नहीं है। बुध आद भी कुछ नहीं था। ज्ञान तो प्रायः लोप हो जाता है। बाप ज्ञान देते हैं गति-सद्गति बैलिए। यह गर्भ में नहीं आते हैं। इसमें बैठे हैं। इनको दूसरा कोई नाम नहीं। औरों के तो शरीर के नाम हैं। यह ब्रु तो है ही परमपिता। वही ज्ञान का सागर है। यह ज्ञान पहले2 भारतवासियों के लिए ही है। उन्हों को ही भक्ति का फल मिलना है। दूसरे धर्म वालों को तो फल मिलना ही नहीं है। भक्ति तुम ही शुरु करते हो। तुमको ही फल देता हूं। बाकी तो सभी है बायप्लाट। वह कोई 84 जन्म भी नहीं लेते हैं। तो बाप बच्चों को समझाते हैं अभी तुमको कोई भी शास्त्र आद पढ़ने की दरकार नहीं है। भक्ति मार्ग में उनको ही याद करते हैं। परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। जैसे जंगली जनावर बिलकुल ही मुर्ख बुधि हैं। कह देते परमात्मा ठिकर-भितर सब में है। वराह अवतार, परशुराम अवतार। बाप कहते हैं भक्ति मार्ग तुम कितने भेड हिंसक बन जाते हो। तुम मनुष्य होते हुये भी कर्तव्य ऐसे करते हो जनावर से भी बदतर। बातें ऐसी बनाते हो जो अपनी ही निन्दा करते हो। राम की सीता चुराई गई। पादरी लोग ऐसे2 भाषण करते थे क्या तुम हिन्दुओं का राम भगवान उनकी सीता भगवती चुराई गई। भगवान में इतनी ताकत भी नहीं थी। हमारे क्रिश्चनधर्म में ऐसी बातें नहीं होती। श्रीकृष्ण को 108 रानियां थीं। वह तो महापतित ठहरा। तुम हिन्दुओं को भगवान इतना पतित। क्राईस्ट के लिए कब निन्दाकी बात नहीं सुनेंगे। ऐसे2 लेक्चर्स सुन कर कितने क्रिश्चन धर्म में चले जाते हैं। हिन्दुओं ने आपे ही अपन को चमाट मारी है। पुजारी बन ऐसे2 बातें करने लगे हैं। भक्ति मार्ग के शास्त्र सुन कर खुश होते हैं। कृष्ण वैकुण्ठ का प्रिन्स वहां फिर यह कंस असुर आद कहां से आये। यह भी नानसेन्स है ना। बाप कहते हैं तुम्हारी पारस बुधि थी सो फिर नानसेन्स बुधि बने हो। शास्त्रों में कितनी निन्दा लिखी है। अभी तुम भक्ति मार्ग के शास्त्र नहीं पढ़ते हो। अभी तुम्हारी चढ़ती कला है। बाप तुमको समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। देह का अभिमान न हो। वहां भी समझते हैं एक पुराना शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेंगे। दुःख की

बात ही नहीं। विकार की वहां बात ही नहीं। विकार होते ही हैं रावण राज्य में। वह है ही निर्विकारी दुनिया। तुम समझाओ तो भी मानेंगे नहीं। कल्प2 जो मानते हैं वही पद पाते हैं। जो नहीं मानते वह पद भी नहीं पाते। बाप कहते हैं यह है ही आरफन की दुनिया। सतयुग में तो बिलकुल पवित्र सुख-शान्ति में रहते हैं। सभी मनोकामनाएं2। जन्मों लिए पूरी हो जाती है। सतयुग में कोई भी कामना होती नहीं। अनाज आद तो अथाह होता है। मुफ्त में सभी कुछ मिल जाता है। सह बम्बई पहलेथी क्या। गांव था। देवतायें सारे ज़मीन पर नहीं रहते। मीठी नदियां जहां होती हैवहां देवतायें थे। स्वर्ग में मनुष्य बहुत थोड़े होते हैं। मूल्य कुछ नहीं। सुदामा ने दो मूठी चावल की दी। उनको महल मिल गये। बाबा ने समझाया है मनुष्य दान-पुण्य करते हैं ईश्वर अर्थ। अभी ईश्वर तो बैठा नहीं हैं। वह कोई भिखारी है क्या। ईश्वर तो दाता है। दान करते हैं समझते ईश्वर दूसरे जन्म में बहुत मिलेगा। तुम दो मूठी देते हो नई दुनिया में बहुत लेते हो। तुम कितनी मेहनत करते हो। खर्चा करते हो। सेन्टर बनाते हो सभीको शिक्षा देने लिए। अपना धन खर्चा करते हो तो अपनी राजाई तुम ही लेते हो। जानते हो बाप हमको नालेज दे रहे हैं। बाप कहते हैं मैं ही अपना परिचय तुमको देता हूं। मेरा परिचय तो कोई को नहीं है। न मैं किसके तन में आता हूं। मैं आता ही एक बार हूं जब पतित दुनिया को चेंज करना होता है। मैं हूं ही पतित पावन। मेरा पार्ट ये संगम युग पर है। सो भी बिलकुल एक्युरेट टाईम पर आता हूं। तुमको थोड़े ही पता पड़ता है शिव बाबा इन में कब आते हैं। कृष्ण की तो तिथ तारीख मिनट घड़ियां आद लिखते हैं। इनका कोईमिनट आद निकाल न सके। यह खुद भी नहीं जानते। पीछे जब नालेज सुनाते हैं तब तब ही मालूम पड़ता है। कशिश होती है। इसमें तो कट चढ़ी हुई थी। परमपिता ने प्रवेश किया तो तुमको कशिश हुई। तुम भाग कर आये। कोई की भी तुम ने प्रवाह न की। बाप तोकहते हैं मैं तो रेपस्युलिटली प्युर हूं। तुम आत्माओं पर कट चढ़ती है। अभी वह कैसे निकले। मैं तो एवर प्युर हूं। ऐसा कोई मनुष्य नहींजिस पर जंक चढ़ी हुई न हो। ड्रामा में सभी आत्माओं को पार्ट मिला हुआ है। यह बड़ी गुह्य बातें हैं। आत्मा कितनी छोटी है। दिव्य-दृष्टि के सिवाय कोई उनको देख न सके। बाप ही आकर तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। जिसको थर्ड आई आफ विज़डम कहा जाता है। आत्मा को ही ज्ञान सुनाते हैं। तुम जानते हो हम आत्माओं को बाप पढ़ाते हैं। भक्ति मार्ग में तो ज्ञान है आटे में नून। कोई2 कुछ अक्षर हैं। जैसे भगवानुवाचः अक्षर राईट हैपरन्तु फिर कृष्ण कहने सेरांग हो जाता है। मन्मनाभव अक्षर ठीक है। अर्थ नहीं समझते। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। यह है गीता का युग। भगवान इस समय ही इस तन में आते हैं। उन्हों ने फिर दिखाया है घोड़े की गाड़ी। उन में कृष्ण बैठा है। अभी कहां भगवालका यह रथ, कहां घोड़ेगाड़ी। कितनी नानसेन्स है। इसलिए फिर बाप आकर तुम बच्चों को नई दुनिया का लायक बनाते हैं। यह है नालायकों की दुनिया। नालायक को फिर बाप आकर लायक बनाते हैं। यह हेबेहद के बाप का घर। बाप सभी आत्माओं को बैठ समझाते हैं। बच्चों को 21 जन्मों लिए हेल्थ-वेल्थ, हेपीनेस देते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। अनादी अविनाशी बना बनाया ड्रामा है। कब शुरु हुआ यह कह नहीं सकते हैं। यह चक्र फिरता ही रहता है। संगम युग काकिसको भी पता नहीं हैं। अब बाप ही आकर बतलाते हैं। मनुष्यों की कितनी पत्थर बुधि है। यह ड्रामा है ही 5000वर्ष का। आधा में सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी आधा में दासी और दास। 2500वर्ष उनको दिया, 2500 इनको। फिर इतना बड़ा गपोड़ा, लाखों वर्ष कह देना कितनी मूर्खता है। जब बेहद का मूर्ख बन जाते हैं तब फिर बाप आकर समझदार बनाते हैं। सभीबेसमझ हैं। अभी क्रिश्चन का पोप आता है क्या आकर करते हैं। हज़ारों की शादियां कराते हैं। यह तो कौस का काम कराते हैं। कौस घर बना देते हैं। काम कटारी पर चढ़ाना। उनको क्या कहेंगे। पोप या कसाई? नाम कितना बड़ा है। अपने ही धर्म में एक दो कौसकराना कितनापाप का काम है। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। और आजकल देखो हाल बनाते हैं, मंदिर बनाते हैं उनमें शादियां का

होती रहती। कोस-घर बना देते हैं। पोप की कितनी महिमा करते हैं। ज्ञान तो कुछ भी नहीं जानते। बड़े2 दिनों पर शादियों की सीजन होती है। छोटे2को भी शादियां करा देते हैं। अभी बाप अपने बच्चों से ही बाते करते हैं। दूसरो से नहीं। वह तो सुनने से ही बिगरते हैं। यह बहिन,भाई बनाते हैं' और तुम प्रजापिता ब्रहमा के बनने से बहिन भाई बनते हो। तुम आत्मायें असल में तो भाईभाई हो। सतयुग में भी पवित्र होते हैं। उनको कहा ही जाता है वाइसलेस वर्ल्ड। तुम योगबल से विश्व की बादशाही लेते हो। क्रिश्चन लोग खुद को भी समझते हैं हमको कोई प्रेर रहा है। हम अपने ही विनाश के लिए बनाते हैं। कहते हैं हमने2 बम्ब बनाये हैं जो एक दुनिया तो 10 दुनियाओं को भी एक बम से खत्म करेंगे। वह फिर कहते दुनिया को ही खत्म कर देंगे। कम्पेटीशन है ना। बाप कहते हैं मैं आता हूं हेविन की स्थापना करने। यह भी समझ की बात है। मनुष्य कितने बेसमझ है। अपने ही विनाश के लिए क्या2 बनाते रहते हैं। अभी दुनिया में कितनी हाहाकार है। फिर जयजयकार हो जावेगी सारी दुनिया में। यह बेहद के बाप का ही काम है। बाप कहते हैं मेरा शरीर तो है नहीं। मैं इस रथ में ही आता हूं। मेरी जयन्ती अलौकिक है। अपने टाईम पर मैं आता हूं। मैं भी ड्रामा अनुसार बांधा हुआ हूं। वह तो समझते कलियुग की आयु लाखों वर्ष है। इसको भक्ति मार्ग का ज्ञान कहा जाता है। यह है ज्ञान और विज्ञान। चक्र को जानना यह है ज्ञान। याद की यात्रा है विज्ञान। इस से ही विकर्म विनाश होंगे। अभी बाप कहते हैं ईविल बातें न सुनो। इस दुनिया को देखते हुये न देखो। बाप नईदुनिया की स्थापना करते हैं। जिस में राग पाप आद कुछ भी नहीं होता। अकाले मृत्यु नहीं होता। ईश्वरी मत से तुम 21 जन्म लिए देवता बन जाते हो। फिर कोई गुरु आद होता ही नहीं। गुरु है भक्ति दुर्गति मार्ग के। बाप कहते हैं मैं तुम्हारी सदगति करता हूं। फिर दुर्गति में तुमको कौन ले जाते हैं? यह कलियुगीगुरु।

दिखाते हैं विष्णु के नाभी से ब्रहमा निकला। उनके हाथ में फिर शास्त्रदेते हैं। अभी विष्णु के नाभी से तो हो न सके। विष्णु से ब्रहमा, ब्रहमा से विष्णु। विष्णु सो फिर 84 जन्मों के बाद ब्रहमा सरस्वती बनते हैं। ब्रहमा सरस्वती सोफिर ल0ना0 बनते हैं। उनको सम्बन्ध देखो कैसा है। दुनिया इन बातों को नहीं जानती हैं। 84 जन्मों बाद तमोप्रधान बन जाते हैं। फिर बाप आकर प्रवेश करते हैं। ब्रहमा सरस्वती एक जन्म में पुरुषार्थ कर ल0ना0 बनते हैं। बाप कहते हैं तत त्वम। कितनी गुह्य बातें हैं। बाकी शास्त्रों में क्या है। वह है उतरती कला की। अभी तुम्हारी है चढ़ती कला। भारतवासियों की ही बात है। जो कनवर्ट हो गये हैं और धर्मों में वह निकल आवेंगे।

यह है पढ़ाई। भगवानुवाच: भगवान वह है जो पुनर्जन्म नहीं लेते। मनुष्यों ने फिर गीता में नाम उनका रख दिया है। जो पूरे 84 जन्म लेती हैं। भगवान फिर 84 जन्म कैसे लेंगे। मानते ही नहीं कहेंगे कृष्ण तो है ही है। जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण है। अभी कृष्ण कोई बैठा है क्या। जो आया सो बोल देते। मनुष्य भी मान लेते। समझते हैं भगवान ही सभोरूप धरते हैं भगवान ही लीला करते हैं। तो यह समझने की बातें हैं। भक्ति-मार्ग में सभी मनुष्य मात्र का पार्ट अपना है। पार्टिशन अपना है। नाम-रूप अपना है। सभी ईश्वर के रूप नहीं हैं। सर्व-व्यापी की बात कितनी डिबेट करते हैं। बात मत पूछो। कुत्ता बिल्ला, ठिकर, भितर में परमात्मा कह देते। बाप कहते हैं मेरी भी ग्लानी देवताओं की भी ग्लानी करते हैं। झाड जड़-जड़ी भूत हो जाता है। तो फिर मैं आता हूं। जास्ती तो रह भी न सकेंगे। स्टर्स की लिमिट है।

अच्छा मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते। ओम।

-::मन्मनाभव::- ..... *-::शिव बाबा याद है::-* ..... *-::मद्याजीभव

::- ओमशान्ति-::